कक्षा 7 के विद्यार्थियों के उपलब्धि एवं शाब्दिक तर्क पर संप्रत्यय निर्माण प्रतिमान की प्रभावशीलता का अध्ययन

***Dr.Archana Shrivastav ***
Professor, B.C.G.Shiksha Mahavidyalaya ,Dewas(M.P.)

***Mrs.Ashlesha Salvi ***
M.Ed, Student
B.C.G.Shiksha Mahavidyalaya ,Dewas(M.P.)

सारांश :

जे. एस. ब्रूनर एवं सहयोगियों द्वारा निर्मित संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान के प्रयोग से विद्यार्थियों में नवीन प्रत्ययों का स्पष्टीकरण तथा व्याख्या प्रभावी ढंग से संभव है। प्रस्तुत अध्ययन संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान का शाब्दिक तर्क एवं उपलब्धि पर प्रभावशीलता का अध्ययन है। अध्ययन के मुख्य उद्देश्य कक्षा 7 के विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं शाब्दिक तर्क पर संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान की प्रभाविता का अध्ययन करना है। अध्ययन के लिए शून्य परिकल्पना का निर्धारण किया गया। अध्ययन हेतु पूर्व परीक्षण - पश्च परीक्षण नियंत्रित समूह अभिकल्प का प्रयोग करते हुए 40 विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया गया। उपलब्धि एवं शाब्दिक तर्क के मापन हेतु स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया। प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण विधि से किया गया परिणामों से स्पष्ट है कि संप्रत्यय निर्माण प्रतिमान का विद्यार्थियों के शाब्दिक तर्क एवं उपलब्धि पर प्रभाव का पाया गया।

मनुष्य का मस्तिष्क विचारों से नियंत्रित होता है तथा विचारों का संबंध शिक्षा से होता है। अतः शिक्षा प्रदान करने हेतु विचारों अथवा संप्रदायों का विकास अत्यंत आवश्यक है। सुकरात ने शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा कि– शिक्षा का अर्थ संसार के सर्वमान्य विचारों को जो कि प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में संभावित होते हैं, प्रकाश में लाना है।

सुकरात का मानना था कि शिक्षा, बालकों को सूचना देकर भ्रमित करना नहीं है अभी तो उनमें विचार शक्ति उत्पन्न कर देना है ताकि वह स्वयं ज्ञान की उपलब्धि हेतु सदैव प्रयत्नशील बना रहे तथा शिक्षक का कार्य है कि वह बालकों को सोचने विचारने व समझने का कार्य करने दे तथा उन्हें आंतरिक शक्ति का बोध कराएं ताकि अधिगम एवं बाल विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ने का शुभ अवसर मिले।

सुकरात शिक्षण कार्य हेतु प्रश्नोत्तरी प्रतिमान का प्रयोग करते थे और प्रश्न पूछने पर विशेष बल देते थे तथा इन्हीं के प्रतिमान की देन फ्लेंडर की अंतः प्रक्रिया है। प्राचीन काल से ही अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण प्रतिमान का प्रयोग किया जा रहा है एवं शिक्षण प्रतिमान का प्रयोग आधुनिक काल में भी अधिक महत्वपूर्ण व आवश्यक है।

शिक्षण के अंतर्गत प्रतिमान अथवा अवधारणा का प्रयोग अत्यंत प्राचीन है। शिक्षण प्रतिमान एक शिक्षण योजना है अथवा एक ऐसा स्वरूप है जो पाठ्यक्रम का स्वरूप निश्चित करता है। शिक्षा साधनों के आकार प्रकार का निर्धारण करता है और कक्षा गत व अन्य स्थितियों में शिक्षक का पथ प्रदर्शन करता है। सामान्यतः प्रतिमान शब्द का प्रयोग किसी आदर्श के रूप में और किसी वस्तु के छोटे आकार के रूप में प्रयोग किया जाता है। किसी आदर्श को सामने लाकर विद्यार्थियों के इन आदर्शों के अनुकरण द्वारा ज्ञान ग्रहण कराने का प्रति मानव द्वारा प्रयास किया जाता है।

शिक्षण क्षेत्र में कुशल शैक्षिक व्यवस्था हेतु शिक्षण प्रारूप बनाए जाते हैं, जिन्हें शिक्षण प्रतिमान कहा जाता है। विद्यार्थियों में विभिन्न कौशलों के विकास के लिए विभिन्न शिक्षण प्रतिमान का प्रयोग किया जाता है एवं छात्रों के विकास में संप्रत्यय का विकास आसानी से किया जा सकता है।

संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान का विकास जे. एस. ब्रूनर तथा उनके सहयोगियों ने किया। इस प्रतिमा का उपयोग करके शिक्षक, छात्रों को प्रत्ययो की सही जानकारी प्रदान करता है। इन प्रतिमान का प्रयोग नवीन प्रत्ययों के स्पष्टीकरण तथा व्याख्या करने में प्रभावशाली ढंग से किया जाता है।

इनमें दो या अधिक वस्तुओं के मध्य समानता तथा असमानता का बोध कराते हुए विभिन्न प्रकार के माध्यमों से तत्वों का एकीकरण करते हुए प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है।

संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान द्वारा छात्रों में आगमन तर्क का विकास, विकल्पों के प्रति जागरूकता, संदिग्ध अवस्था का सहन, तार्किक चिंतन के प्रति संवेदनशीलता आदि प्रभावों का विकास किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त निर्णय लेने की योग्यता का विकास भी किया जा सकता है जिसके कारण छात्र में उचित निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

सिंह दलजीत (1990) ने भौतिक विज्ञान शिक्षण पर संप्रत्यय निर्माण प्रतिमान एवं खोज प्रशिक्षण प्रतिमान परंपरागत विधि की तुलना में प्रभावी पाएं। इसी के साथ भौतिक विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति पर भी संप्रत्यय निर्माण प्रतिमान प्रभावी रहा।

इसी प्रकार बावा एम.एस. (1991) ने भी अपने अध्ययन में संप्रत्यय निर्माण प्रतिमान को परंपरागत विधि की तुलना में संज्ञान व समझ स्तर पर प्रभावी पाया गया।

मनोचा विनीता (1991) ने अपने अध्ययन में पाया कि कक्षा 9 के विद्यार्थियों के जीवन विज्ञान की उपलब्धि पर परंपरागत विधि की तुलना में संप्रत्य निर्माण प्रतिमान का सार्थक प्रभाव पाया।

इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन की योजना बनाई गई।

उद्देश्य :

1. कक्षा 7 के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान की प्रभाविता का अध्ययन करना।
2. कक्षा 7 के विद्यार्थियों के शाब्दिक तर्क पर संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान पैकेज ,लिंग एवं इनकी अंत क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

1. कक्षा 7 के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर संप्रत्यय निर्माण प्रतिमान का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
2. कक्षा 7 के विद्यार्थियों के शाब्दिक अर्थ पर संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान पैकेज, लिंग एवं इनकी अंत क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

न्यादर्श :

विद्यालय के कक्षा 7 के विद्यार्थियों पर संप्रत्यय निर्माण प्रतिमान के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु यादृच्छिक विधि से चयनित करके 40 विद्यार्थियों को लिया गया। 20 विद्यार्थियों को प्रयोगात्मक समूह के अंतर्गत रखा गया तथा 20 विद्यार्थियों को नियंत्रित समूह में रखा गया।

उपकरण :

अध्ययन हेतु निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया।

1. स्वनिर्मित शाब्दिक तर्क परीक्षण।
2. स्वनिर्मित भाषा उपलब्धि परीक्षण।
3. संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान पर आधारित पाठ योजना का पैकेज।

प्रस्तुत अध्ययन शोध की प्रयोगात्मक विधि पर आधारित है अध्ययन में पूर्व परीक्षण, पश्च परीक्षण, नियंत्रित समूह विकल्प का उपयोग किया गया है।

प्राप्त वस्तु का विश्लेषण मध्यमान प्रमाणिक विचलन, संबंधित t (Co-related t test) परीक्षण एवं 2x2 कारकीय अभिकल्प प्रसरण विश्लेषण (2x2 factorial design Analysis of Variance) से किया गया।

तालिका क्रमांक 1.1

कक्षा 7 के विद्यार्थियों के उपलब्धि पर संप्रत्यय निर्माण प्रतिमान के प्रभाव के अध्ययन के लिये प्रयोगात्मक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के M, S, D, r, एवं t के मान का विवरण :

समुह	M	S.D.	N	r	t-value
पूर्व परीक्षण	12.7	4.43	20	+0.78	6.77**
पश्च परीक्षण	16.9	3.37	20		

**0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक 1.2

विद्यार्थियों के शाब्दिक तर्क पर संकल्पना प्राप्ति पैकेज, लिंग एवं इनकी अन्तक्रिया के प्रभाव के अध्ययन के लिए 2x2 कारकीय अभिकल्प प्रसरण का विश्लेषण (2x2 Factorial design Analysis of Varience) का सारांश।

Source of Varience	df	SS	MSS	F-Value
Group	1	27.99	27.99	3.49
Sex	1	42.55	42.55	5.31*
Group x Sex	1	6.89	6.89	0.86
Error	36	288.65	8.01	
Total	39			

***0.05 स्तर पर सार्थक**

परिणाम एवं विश्लेषण

तालिका क्रमांक 1.1 में संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान का प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों के हिंदी भाषा उपलब्धि के प्रभाव को प्रदर्शित किया गया। संकल्पना प्राप्ति का हिंदी भाषा उपलब्धि पर प्रभाव के लिए t का मान 6.77 पाया गया जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। इन परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान का कक्षा 7 के विद्यार्थियों के हिंदी भाषा उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

इसी प्रकार तालिका क्रमांक 1,2, 3 एवं 4 में संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान पैकेज, लिंग एवं इनकी अंत क्रिया का शाब्दिक तर्क पर प्रभाव के लिए F का मान प्रदर्शित किया गया है।

संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान पैकेज का शाब्दिक तर्क पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। लिंग के संदर्भ में शाब्दिक तर्क के लिए F का मान 5.31 पाया गया जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया। यह मान प्रदर्शित करता है कि शाब्दिक तर्क के संदर्भ में बालिकाओं के शाब्दिक तर्क परीक्षण के मध्यमान बालकों के शाब्दिक तक परीक्षण के माध्यम से सार्थक उच्च स्तरीय पाए गए। इसी प्रकार समूह व लिंग की अंतर क्रिया का विद्यार्थियों के शाब्दिक तक पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

निष्कर्ष -

1. प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा उपलब्धि के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में सार्थक अंतर पाया गया एवं उनकी उपलब्धि पर संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान का सार्थक प्रभाव पाया गया।
2. प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों के शाब्दिक तर्क के मध्यमान नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के शाब्दिक तर्क के मध्यमान से उच्च पाए गए।
3. बालिकाओं के शाब्दिक तर्क के मध्यमान बालकों के शाब्दिक तर्क के मध्यमान से सार्थक उच्च स्तरीय पाए गए।
4. समूह एवं लिंग की अंतक्रिया का शाब्दिक तर्क पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक, संज्ञानात्मक, भावात्म्क व क्रियात्मक पक्षों का विकास किया जा सकता है। विभिन्न विषयों के अध्यापनों द्वारा प्रतिमान शिक्षण विधि के माध्यम से विद्यार्थियों में नैसर्गिक संकल्पनाओं का विकास करते हुए सर्वांगीण विकास का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान शिक्षण विधि द्वारा विद्यार्थियों में संकल्पनाओं के निर्माण की क्षमता विकसित की जा सकती है तथा संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान द्वारा आगमन तर्क का विकास, विकल्पों के जागरूकता संदिग्ध अवस्था का सहन, तार्किक चिंतन के प्रति संवेदनशीलता, भाषा–समस्या, समाधान आदि प्रभावों को विकसित किया जा सकता है।

संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान का प्रयोग विद्यार्थियों के निर्णय क्षमता को प्रभावित करता है। इससे बालकों में निर्णय क्षमता का विकास किया जा सकता है जो विद्यार्थियों को भावी जीवन के लिए तैयार करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Bawa M.S. (1991) Conceptual learning and Research.

Possibilities Bruner’s view. Indian education review.

Best J.W. (1998) Research in Education, New Delhi Prentice Hall Publication

Sansamwal D.N. and Singh A.K. (1991) Shikshan Pratiman Indore : Asiatik Publication